

घर जहाँ आत्मा वास करता है ...

## घर में धीरज ( सहनशीलता )

( गलातियों 5:22, 23 )

पवित्र आत्मा के फल की चौथी विशेषता धीरज (NASB), या सहनशीलता (KJV) है। इस पाठ का विषय यह है कि धीरज से घर में स्थायीत्व बनाने में सहायता मिलेगी।

हमें स्थायीत्व पर संदेश में दिलचस्पी होनी चाहिए, क्योंकि घरों में, चाहे वह मसीही घर ही क्यों न हों, इतना अधिक अस्थायीपन पाया जाता है। हमारे आस-पास के कई घर टूट रहे हैं, चाहे पति या पत्नी में से एक या दोनों मसीही क्यों न हों!

हमारा उद्देश्य उन लोगों को डांटना नहीं है, जिन्होंने तलाक ले लिया है। इसके विपरीत हमारा उद्देश्य विवाहित लोगों या विवाह करने की योजना बना रहे लोगों को सहायता देने की कोशिश करना है जिससे उनका विवाह बना रहे। चाहे हमारे अपने विवाह बने रहे हों या न, विवाहों के स्थायीत्व को बढ़ावा देने में दिलचस्पी होनी चाहिए।

धीरज का गुण घर में स्थायीत्व लाने में कैसे सहायक हो सकता है? हमारे लिए उन नश्वर लोगों के साथ रहना सम्भव बनाने के लिए जो गलतियां करते हैं। वह कौन है? हर कोई!

घर कैसे टूट जाता है? टूटे हुए घर में पति और पत्नी का आमतौर पर तुरन्त उत्तर होता है। “उसने झूठ बोला!”, “इसने चोरी की!”, “वह गैर ज़िम्मेदार था!”, “हमारी किसी बात पर सहमत हो ही नहीं सकती!”, “वह बेवकूफ और ढीठ थी!”, “वह मुझे मारता-पीटता था!” ऐसी असफलताओं से सचमुच घर टूट सकता है?

क्या ऐसी समस्याओं का सामना करने वाला हर दम्पति तलाक ले लेता है? उत्तर है नहीं। पाप, त्रुटि, गलती या दोष जो भी हो, किसी को उसके साथ रहना सीखकर विवाह को बनाए रखना आवश्यक है।

धीरज या सहनशीलता में “इसके साथ जीना,” या “इसे बर्दाशत करना” भी तो है। इस पाठ में हम इसी पर बात कर रहे हैं।

परन्तु इस प्वाइंट को विस्तार देने से पहले हमें व्यापक संदर्भ में अपनी चर्चा को रखना आवश्यक है और वह संदर्भ झगड़े का समाधान है। घर में झगड़ों को निपटाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? एक व्यक्ति के दूसरे को निराश करने या आहत करने पर, या पति या पत्नी के आपस में असहमत होने की समस्याओं को कैसे सुलझाया जा सकता है?

### बाइबल झगड़े के समाधान के लिए मार्ग दर्शन देती है

पवित्र शास्त्र हमें दो लोगों के बीच झगड़े निपटाने के लिए परमेश्वर का ढंग बताता है। उसमें सुधार का एक ही तरीका है कि झगड़े आरम्भ होने से पहले ही बन्द हो जाएं।

## झगड़ों से परहेज़ करना

परहेज़ सबसे अच्छा इलाज है। समस्याओं को रोकने के लिए कौन से कुछ कदम उठाए जा सकते हैं? परहेज़ में सबसे पहले तो सही व्यक्ति से विवाह करना यानी किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना शामिल है जिससे बार-बार अनबन होने की बात न हो। सही जीवन साथी चुनना कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है? चार सुझावों से सहायता मिल सकती है।

1. *मसीही व्यक्ति से विवाह करें*—जो विश्वासी मसीही हो।
2. *अच्छे व्यक्ति से*—यानी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जो विवेकी, दयालू और प्रेमी हो, जो परवाह करने वाला, जिम्मेदार और ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जाता हो।
3. *समान पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति से विवाह करें*; जितना दोनों के विचार मिलते होंगे उतना ही विवाह सफल होगा।
4. सबसे बढ़कर, *विवाह केवल* किसी सुन्दर लड़की या जवान आदमी के साथ “प्रेम हो जाने” के आधार पर ही न करें। केवल सुन्दरता या शारीरिक आकर्षण के आधार पर किए गए विवाह के अधिक देर चलने की आशा कम है।

इसके अलावा, झगड़े से परहेज़ में एक-दूसरे के साथ सही व्यवहार करने की हमारी अपनी कोशिश भी है। इसमें प्रेम करने वाले, शिष्टाचारी और दयालु होना शामिल है। यदि विवाह में दोनों जन दूसरे को सन्तुष्ट करने की कोशिश करते और दूसरे की सेवा की तलाश में रहें तो झगड़े पैदा होने की बहुत कम उम्मीद है। इसके अलावा जो बात पति और पत्नी के लिए है वही घर में दूसरे सदस्यों के लिए भी है। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ सही व्यवहार करना आवश्यक है (देखें इफिसियों 6:4)। बच्चों के लिए एक-दूसरे के साथ सही व्यवहार करना आवश्यक है। झगड़ों के उपचार का सबसे बढ़िया तरीका उन्हें मसीही नियमों की उदार प्रासंगिकता के द्वारा उन से परहेज़ रखना है!

हमारी हर कोशिश के बावजूद झगड़े रहेंगे ही। हम फिर भी कभी न कभी एक-दूसरे को आहत कर ही देंगे। तब हमें क्या करना चाहिए?

## झगड़ों से निपटने में बाइबल के मार्ग दर्शनों को मानना

गलती हो जाने पर हमें उस समस्या के समधान के लिए, जो बाइबल कहती है वही करना आवश्यक है। बुनियादी तौर पर बाइबल चाहती है कि ठोकर देने वाला ठोकर खाने वाले के पास जाए।

*यदि परिवार के किसी सदस्य ने घर के किसी व्यक्ति के विरुद्ध पाप किया है, तो यह उसी की जिम्मेदारी है कि यह समझ आने पर कि इसमें गड़बड़ है वह जिनती जल्दी हो सके उसके पास जाए जिसका उसने दिल दुखाया है* (मत्ती 5:23, 24)। ठोकर देने वाले को जिसका उसने पाप किया है उसके पास जाकर क्या करना चाहिए? वह अपने पाप को मान ले (याकूब 5:16)! उसे बिना बहाना बनाए (“माफ करना, पर आप भी गलत थे”) और बिना जवाबी हमला किए (“मेरी नीयत साफ थी”) यह मान लेना चाहिए कि वह गलत था और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसके अलावा उसे सच्चे मन से दिखाना चाहिए कि वह शर्मिदा है और ऐसा कभी दोबारा करने की कोशिश नहीं करेगा। फिर ठोकर खाया हुआ व्यक्ति, यानी जिसका अपराध

हुआ है, कहे, “क्षमा किया,” और यह दिल से कहे।

पाप जिसने भी किया, इसी नमूने का पालन किया जाना चाहिए। मसीही लोगों को एक-दूसरे के सामने अपनी गलतियों को मान लेना चाहिए। बच्चों को अपने पाप को अपने माता-पिता के सामने मान लेना चाहिए; माता-पिता को अपनी गलती अपने बच्चों के सामने मान लेना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि कोई माता या पिता गलती करता है, तो उसे अपने बच्चे से यह कहना चाहिए, “मैंने तुम्हारे साथ ऐसा करके [या कहके] गलती की और मैं बहुत शर्मिदा हूँ।”

गलती को मान लेने के बाद, गलती करने वाला और जिसका अपराध किया गया है, इकट्ठे प्रार्थना करें। दोनों यह मानते हुए कि परमेश्वर क्षमा कर देगा, गलती करने वाले के लिए परमेश्वर से क्षमा मांग सकते हैं।

*यदि किसी को लगे कि घर में किसी दूसरे ने उसका अपराध किया है, तो झगड़े के निपटारे के लिए बाइबली फॉर्मूला वैसे ही आरम्भ होता है: परिवार के उस सदस्य के पास (मत्ती 18:15)। जिसका अपराध हुआ है, वह अपराध करने वाले परिवार के सदस्य के पास अकेले में जाकर समस्या को सुलझाने की कोशिश कर सकता है। उसे अपने जाने के ढंग पर चौकस रहना है क्योंकि किसी की अनुमानित गलती के बारे में किसी से बात करने के लिए जाने से अच्छा, बढ़िया और बहुत बढ़िया हो सकता है। सही रास्ते में, सही समय की तलाश में, अपनी बात की योजना बनाने के लिए जाना और जाने में सही व्यवहार रखना आवश्यक है-परन्तु मुख्य बात जाना ही है! इसके अलावा यह काम जल्दी से हो जाना आवश्यक है। इफिसियों 4:26 कहता है, “सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।” विवाहित दम्पतियों के लिए बढ़िया नियम है “बिस्तर पर क्रोध से न जाओ।”*

## **झगड़ा निपटाने की बाइबली योजना अगर काम न करे?**

कई बार झगड़ा निपटाने की बाइबल की योजना काम नहीं करती। यानी कोमलता से बात करने से हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति मन फिराकर अपने व्यवहार को न बदले।

### **लोग बदलेंगे क्यों नहीं?**

क्यों नहीं? हम यह मान लेते हैं कि दूसरा व्यक्ति उसकी गलती की बात उससे किए जाने पर नहीं बदलता तो वह ढीठ, अड़ियल या दुष्ट है। परन्तु डांट को न मानने के उसके और कारण भी हो सकते हैं।

*बदलने की आवश्यकता पर सहमत होने में नाकामी।* एक सम्भावना यह है कि वह शायद इसलिए नहीं बदलता क्योंकि वह यह मानने को तैयार नहीं है कि जो वह कर रहा है उसमें कोई बुराई है। हो सकता है कि पत्नी इसलिए परेशान है क्योंकि उसका पति गन्दे कपड़े फर्श पर पड़े रहने देता है। वह उससे अपने कपड़े उठवाने की कोशिश करती है पर वह उसकी बात पर ध्यान देता नहीं लगता। वह क्यों नहीं बदलेगा? हो सकता है कि उसकी बीस साल पुरानी आदत जिसे तोड़ना कठिन है। हो सकता है कि उसके बचपन में, वह या उसका पिता गन्दे कपड़े फर्श पर रहने देता था और उसकी मां उन्हें उठा लेती थी। शायद उसे नहीं लगता कि इसका कोई कारण है क्योंकि उसकी मां उसके गन्दे कपड़े उठा लेती थी, इसलिए शायद उसे लगता है कि उसकी

पत्नी को भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए। उसे लगता है कि उसके कपड़े उठाना कमजोरी का प्रतीक है या उसके मर्द होने पर धब्बा है। जो भी कारण हो, वह यह नहीं मानता कि उसे अपने गन्दे कपड़े उठाने चाहिए।

*मानवीय निर्बलता।* पति या पत्नी के किसी मामले पर बाइबल के ढंग पर आने के बाद बदलने में नाकाम रहने पर एक और सम्भावना है कि वह कमजोर है और परीक्षा का सामना नहीं कर सकता या सकती। शायद यह सम्भावना शराबी पति या पत्नी के मामले में समझानी सबसे आसान है। कितनी भी फटकार, डांट या मिन्नतें शराबी की समस्याओं को सुलझा नहीं सकती। शराब के आदी व्यक्ति की लाख कोशिश करने के बावजूद, अधिक सम्भावना यही बनी रहती है कि वह शराब फिर से पीने लगेगा। शराब पीने जैसी कई ऐसी कमजोरियां हैं जिन पर काबू पाना लगभग उतना ही कठिन है। जब घर में कोई गलत व्यवहार को बदल नहीं पाता तो उसे व्यक्तिगत कमजोरी के कारण पाप के चंगुल से छूटना कठिन हो सकता है। ऐसे मामले में परिवार के लोगों को समझना आवश्यक है कि उसे सहायता की आवश्यकता है।

### जब लोग बदलेंगे नहीं तो क्या किया जा सकता है ?

यदि पति और पत्नी दोनों मसीही हैं तो बाइबल के ढंग से काम करना चाहिए। वह कहेगा, “यदि तुम्हें ऐसा लगता है तो मैं बदलने की कोशिश करूंगा”; वह कहेगी, “यदि आपको लगता है कि यह गलत है, तो मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगी।” परन्तु जब बाइबल का ढंग काम न करे और झगड़े का कारण वैसे ही बना रहे तो ? अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल किया गया है।

*शिकायत करना ?* हम इसे 99 प्रतिशत मान सकते हैं कि दोष निकालना किसी प्रकार काम नहीं करता! पत्नी को लग सकता है, “यदि मैं अपने पति को याद दिलाती रहूँ, तो अन्त में वह बदल जाएगा।” वहीं पति सोच रहा हो सकता है, “जब तक यह इस बारे में शिकायत करती रहती है तब तक मैं वैसा नहीं करूंगा जैसा यह चाह रही है!” (पत्नी को लगा था कि वह सुझाव दे रही है जबकि पति को लग सकता है कि वह दोष निकाल रही है।)

*तलाक ?* यदि समस्या का किसी प्रकार से समाधान नहीं हो सकता और झगड़े बरकरार रहते हैं तो क्या दम्पति को पूरा विवाह ही छोड़ देना चाहिए ? कुछ समस्याएं होती हैं जो सचमुच लगता है कि उनका समाधान नहीं हो सकता।

मैं एक आदमी को जानता था, जो अधिकतर समय अपनी पत्नी के साथ बिल्कुल अनादर भरे ढंग से व्यवहार करता था। वह उसका मजाक उड़ाता और उस पर ताने कसता था। उस आदमी को कोई चीज बदल नहीं पाई। उसकी पत्नी को क्या करना चाहिए था ? क्या उसे तलाक ले लेना चाहिए था ? कई स्त्रियां और पुरुष पाते हैं कि उनका विवाह शराबी से हो गया है। वे उसका क्या कर सकते हैं, क्या शराबी पति या पत्नी से तलाक ले लें ? कुछ पुरुष और स्त्रियां पैसे के मामले में बिल्कुल गैर जिम्मेदार लगते हैं; जिस कारण उनके परिवारों में आर्थिक तंगी बनी रहती है। ऐसी स्थिति में क्या किया जाना चाहिए ? क्या इसका उत्तर तलाक है ? बेवफ़ाई का क्या हल है ? बाइबल बताती है कि अनैतिकता के मामले में, तलाक की अनुमति है, आवश्यकता नहीं (मती 19:9)। क्या केवल तलाक ही उत्तर या सबसे बढ़िया उत्तर है ? मानसिक रोग होने पर क्या हो सकता है ? यदि एक साथी मानसिक रूप में रोगी है, तो क्या दूसरे को विवाह को

खत्म कर देना चाहिए ?

यह ऐसे सवाल हैं जिनका उत्तर आसान नहीं है। एक पति या पत्नी अपने साथी की गलती को बर्दाश्त करने का निर्णय लेकर स्पष्टता उसे पाप करने के योग्य बना सकता या सकती है। कई बार यह हकीकत कि एक साथी बेवफ़ा है-विशेषकर यदि वह लगातार बेवफ़ाई कर रहा या कर रही है-उसके साथ रहने को असम्भव बना देता है। एक साथी शारीरिक रूप में गलत हो सकता है; निश्चय ही परमेश्वर गलत साथी के साथ रहकर किसी को अपना जीवन खतरे में डालने की उम्मीद नहीं करता। ऐसे मामलों में अपनी शारीरिक या मानसिक या आत्मिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मसीही पत्नी या पति को उस साथी को छोड़ने को विवश होना पड़ सकता है। तभी भी मसीही पति या पत्नी को यह समझाना आवश्यक है कि तलाक पहला और सबसे बढ़िया समाधान नहीं है। तलाक हर हाल में पूरा होगा; कुछ मामलों में यह आवश्यक हो सकता है, पर यह कभी भी सकारात्मक भलाई में नहीं होता।

विवाह के साथी के बदलने से इनकार करने पर यदि शिकायत करना या तलाक लेना दोनों में से कोई भी अच्छा समाधान न दे तो क्या होगा? यह प्रश्न हमें वहीं ले जाता है जहां से हम ने आरम्भ किया था।

## धीरज, या सहनशीलता की आवश्यकता हो सकती है

जब वैवाहिक झगड़े किसी और बात से न निपटें तो धीरज आवश्यक होता है। “धीरज” क्या है ?

### “धीरज” का अर्थ

पौलुस ने यूनानी शब्द के रूपों का जो गलातियों 5:22 में इन अवधारणाओं को व्यक्त करते हैं कई बार इस्तेमाल किया: *makrothumia*. KJV में इसका अनुवाद आम तौर पर “सहनशीलता” हुआ है। इसका अक्षरशः अर्थ “प्राकृतिक है” इस शब्द को “उत्तेजना” का सामना होने पर आत्मसंयम का गुण जो जल्दबाजी में बदला नहीं लेता या जल्दी से दण्ड नहीं देता “के लिए यह है।”<sup>2</sup> इसका सम्बन्ध एक और शब्द *hupomene* से है जिसका अनुवाद “धीरज” हुआ है और यह “सहनशक्ति” या “धैर्य” का सुझाव देता है, विशेषकर परमेश्वर से दूर होने का दबाव होने पर। इसका सम्बन्ध *anochē* से है जिसका अनुवाद आम तौर पर विरोधी लोगों के सम्बन्ध में *makrothumia* (धैर्य) दिखाता है।<sup>3</sup>

नये नियम के अनुसार, (1) परमेश्वर धीरजवंत, या सहनशील है। रोमियों 2:4 परमेश्वर की “कृपा और सहनशीलता और धीरज” की बात करता है (KJV; देखें 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9, 15)। फिर हम पढ़ते हैं कि (2) मसीही धीरजवंत या सहनशील है। पौलुस ने कहा कि उस पर दया हुई ताकि मसीह पौलुस के मन परिवर्तन में अपनी पूरी सहनशीलता “को दिखा सके” (1 तीमुथियुस 1:16)। (3) इसलिए मसीही लोग धीरजवंत या सहनशील होने चाहिए। अन्य मामलों की तरह इस मामले में भी हमें परमेश्वर का अनुसरण करने वाले (इफिसियों 5:1) और मसीह का अनुकरण करने वाले होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 11:1; 1 पतरस 2:21)। इसलिए इफिसियों 4:1, 2 और कुलुस्सियों 3:12, 13 दोनों मसीही लोगों से

धीरजवंत या सहनशील होने को कहते हैं। इफिसियों 4:1, 2 में धीरज को दीनता और नम्रता के साथ और “एक-दूसरे की सह” लेने के साथ जोड़ा गया है। कुलुस्सियों 3:12-14 में धीरज को “करुणा” के साथ, “भलाई और दीनता और नम्रता” के साथ, “एक-दूसरे की सह” लेने के साथ और “एक-दूसरे को क्षमा” और “प्रेम करने से जोड़ा गया है।”

इस सारी जानकारी को इकट्ठा करने पर हमें यह सीखने को मिलता है कि वचन उतेजना के समय आत्मसंयम का सुझाव देता है, जो हमें जल्दबाजी में बदला लेने या दण्ड देने से रोके। यह विरोधी लोगों के सम्बन्ध में धीरज रखना है। यह क्रोध का उल्टा है। यह दया, सहनशीलता, क्षमा और प्रेम से जुड़ा है।

यदि हम धीरजवन्त हैं और विवाह में इस गुण को दिखाते हैं तो हम जल्दी में परेशान नहीं होंगे। हम बदला नहीं लेंगे या दण्ड नहीं देंगे। हम अपने साथी से प्रेम करेंगे, चाहे वे हमारे प्रति विरोध ही रखते हों। मसीही लोग अपनी पत्नियों के प्रति दया और अनुग्रह दिखाएंगे। पत्नियां अपने पतियों को उनकी कमजोरी या उनकी परेशानियों में सहने को या बर्दाश्त करने को तैयार होंगी। परिवारिक लोग क्षमा करने वाले होंगे। झगड़े होने और यह लगने पर कि किसी से सहायता नहीं मिलेगी, धीरजवंत या सहनशील होना-जिसमें प्रेम करने वाले, अनुग्रहकारी, दयालु, सहनशील और क्षमा करने वाले ही होंगे!

### धीरज की प्रासंगिकता

इस खूबी को विवाह पर लागू करने के लिए, मसीही साथी के मन में चलने वाली ऐसी बातचीत की कल्पना करें:

*अधीर सोच*

*बाइबली सोच*

“इसका लक्ष्य ही मुझे चिड़ाना है!”

“दोष न लगाओ ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाए!”

“मैंने सम्बन्ध सुधारने की हर कोशिश की है और अब नहीं कर सकती; मैं तलाक ले रही हूँ।”

क्या “आपने धीरज? सहनशीलता? क्षमा? से कोशिश की?”

“पर वह इसका [या की] हकदार ही नहीं!”

“क्या हम परमेश्वर की क्षमा और सहनशीलता के हकदार हैं?”

“पर मैं इसके व्यवहार से बहुत नाराज हूँ!”

“क्या आपकी खुशी सबसे बड़ी बात है?”

“आप यह कह रहे हैं कि मुझे अपनी पत्नी या पति से किसी हाल में तलाक नहीं लेना चाहिए।”

“यीशु ने कहा, ‘जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग’ न करे।”

“पर उसने मुझे इतनी बार दुख पहुंचाया है!”

“7 का 70 गुणा जितना-और इससे कुछ अधिक?”

“मैं इससे नफरत करता [या करती] हूँ!”

“अपनी शत्रुओं से प्रेम रखो।”

ये वाक्य यह जोर देने की मंशा से नहीं दिए गए कि तलाक हर हाल में गलत है बल्कि वे हमें ये सहायता करने की मंशा से दिए गए हैं कि मसीही होने के रूप में हम, साथी की कमियों या पापों के कारण तलाक पर विचार करने का भयानक कदम उठाने से पहले बड़ी सावधानी से

विचार करें।

## धीरज का मोल

मान लें कि हम सहनशील, या धीरजवंत हैं और निर्णय लेते हैं कि हम अपने साथियों की गलतियों से सहमत होना सीखेंगे। यह विवाह को कैसे प्रभावित करेगा ?

*सहनशील होने का महत्व है:*

(1) *हम बेहतर लोग बनते हैं क्योंकि हम सहनशील रहकर क्षमा करते हैं। हम और परमेश्वर के जैसे, और मसीह के जैसे बनते हैं।*

(2) *हम खुशहाल लोग भी बनते हैं, क्योंकि हम निर्णय लेते हैं कि हम केवल अपने लिए जिम्मेदार हैं न कि अपने साथियों के लिए। जब हम अपने साथियों के किए के कारण परेशान होते हैं तो हम वास्तव में अपने साथ-साथ उनके लिए भी जिम्मेदारी को मान रहे होते हैं। हमें उस जिम्मेदारी से इनकार करना पड़ेगा। इस प्रकार से हम यह मान लेते हैं कि हर व्यक्ति केवल अपने अनन्त भविष्य का इन्चार्ज है।*

(3) *हमारे साथी बेहतर लोग बन सकते हैं। इसमें एक विरोधाभास है। यदि हम धीरजवंत बनना चाहते हैं तो हमें यह निर्णय लेना होगा कि हम अपने साथियों को नहीं बदल सकते। साथी को साथी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने का निर्णय लेने के कारण, वह साथी आम तौर पर (चाहे हमेशा नहीं) बदल जाएगा।*

(4) *हमारे घर बेहतर घर हों। जब हम ढील देते हैं, यानी अपने वैवाहिक साथियों को कुछ छूट देते हैं और शिकायत करना बन्द कर देते हैं, तो झगड़े भी घट जाएंगे। इसका परिणाम यह होगा कि जीवन खुशहाल हो जाएगा।*

(5) *सबसे महत्वपूर्ण, जैसे हम क्षमा करते हैं, वैसे ही हमें परमेश्वर द्वारा क्षमा किया जाएगा! हम सब को क्षमा की आवश्यकता है।*

## सारांश

हम ने कहा है कि विवाह में स्थायित्व लाने के लिए धीरजवंत होना या सहनशील होना सहायता करेगा। जब आपके विवाह में झगड़े हों, तो उन्हें पवित्र शास्त्र के ढंग से निपटाने की कोशिश करें। परन्तु आपको यह समझना चाहिए कि कुछ झगड़े बिल्कुल नहीं सुलझेंगे। फिर आपके मसीही होने की वास्तविक परीक्षा वही है; धीरजवंत होने का गुण विशेषकर तभी काम आता है।

आपको तब धीरजवंत क्यों होना चाहिए? हम अपने मूल वाक्य को घुमाकर इसे इस प्रकार से देखते हैं: विवाह के स्थायीपन में विश्वास आपको धीरजवंत होने में सहायता देगा। यदि आपको पक्का यकीन है कि विवाह स्थाई है, तो आप उसके साथ जिससे आपने विवाह कराने के लिए चुना है धीरजवंत होना और क्षमा करना सीखेंगे, क्योंकि आपको करना ही पड़ेगा!

## टिप्पणियां

<sup>1</sup>यह कहने का कि कोई भी पति या पत्नी कई बार अपने साथी को छोड़ने को विवश महसूस कर सकता है अर्थ यह नहीं है कि उसे तलाक के बाद पुनर्विवाह करने का अधिकार है।<sup>24</sup> सहनशीलता ... क्रोध का विपरीत है और इसका सम्बन्ध दया से है; और इसका इस्तेमाल परमेश्वर के लिए हुआ है, निर्गमन 34:6, LXX, रोमियों 2:4, 1 पतरस 3:20. धीरज वह गुण है जो परीक्षा आने पर परिस्थितियों के आगे समर्पण नहीं करता या हार नहीं मानता; यह निराशा का विपरीत है और इसका सम्बन्ध आशा से है ...'' (सी. एफ. हॉग एण्ड डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एपिस्टल्स टु द थेस्सलोनियंस* [पृष्ठ नहीं: 1914; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1959], 183-84)।  
<sup>2</sup>डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम वाइट, जूनि., *वाइन 'स कम्प्लीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 247.